Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य
अध्याय 01 - कबीर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के अनुसार सद्गुरु ने हाथ में क्या दिया ?

(क) ज्ञान का दीपक
(ख) वेदशास्त्र का दीपक
(ग) लोक मान्यताओं का दीपक
(घ) मिट्टी का दीपक
उत्तर: (क) ज्ञान का दीपक

प्रश्न 2. कबीर के अनुसार सतगुरु कैसे प्राप्त होता है?

(क) ज्ञान प्रकाशित होने पर
(ख) भगवान की कृपा होने पर
(ग) शास्त्रों का अध्ययन करने पर
(घ) तीर्थ भ्रमण करने पर
उत्तर: (क) ज्ञान प्रकाशित होने पर

प्रश्न 3. कबीर दास ने किस प्रकार की आँधी आने की बात कही है?

(क) धूल भरी आँधी
(ख) ज्ञान की आँधी
(ग) तेज आँधी-पानी।
(घ) कूड़ा-कर्कट उड़ाने वाली आँधी
उत्तर: (ख) ज्ञान की आँधी

प्रश्न 4. कबीर भक्ति काल की किस भक्ति धारा के प्रतिनिधि भक्त कवि माने जाते हैं

(क) राम भक्ति धारा
(ख) कृष्ण भक्ति
(ग) ज्ञानाश्रयी निर्गुण धारा
(घ) प्रेमाश्रयी (सूफी)
उत्तर: (ग) ज्ञानाश्रयी निर्गुण धारा

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर ने किसका चिंतन करने को कहा है ?

उत्तर: कबीर ने केवल हरिनाम का चिंतन करने को कहा है।

प्रश्न 2. कबीर ने इस संसार को किसके फूल के समान बताया है?

उत्तर: कबीर ने इस संसार को सेवल के फूल के समान बताया है।

प्रश्न 3. 'संतो आई ज्ञान की आँधी रे।' में कौन-सा अलंकार है। लिखिए।

उत्तर: इस पंक्ति में रूपक अलंकार है। ज्ञान के आगमन को आँधी का रूप प्रदान किया गया है।

प्रश्न 4. कवि नेत्रों के भीतर किसके आने पर नेत्र बंद करना चाहता है?

उत्तर: कबीर अपने प्रियतम ईश्वर के नेत्रों में आने पर अपने नेत्र बंद कर लेना चाहते हैं।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के अनुसार मूर्ख का साथ क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर: मनुष्य जिसकी भी संगति में रहता है उसी जैसा हो जाता है। संगति के प्रभाव से बच पाना बहुत कठिन हुआ करता है। कोई अहंकारवश यह सोचे कि वह मूर्ख की संगति करके उसे सुधार देगा तो यह अपने आप को धोखा देना है। कोई कितना भी प्रयास करे, लोहे का टुकड़ा पानी पर नहीं तैर सकता। संगति के प्रभाव का प्रमाण स्वाति नक्षत्र में बरसने वाली बँद के परिणाम में देखा जा सकता है। एक ही बूंद केले, सीपी और सर्प के मुख में पड़ने पर क्रमश: कपूर, मोती और विष बन जाती है। अत: मूर्ख को सुधारने का प्रयास करोगे, तो स्वयं मूर्ख हो जाओगे।

प्रश्न 2. जीवात्मा किससे मिलने के लिए रात-दिन तड़पती है?

उत्तर: कबीर यद्यपि ज्ञानमार्गी भक्त हैं किन्तु उनके हृदय की भावुकता के दर्शन जीवात्मा और परमात्मा के सहज सम्बन्ध को प्रकाशित करते सक्षम होते हैं। वह स्वयं परमात्मारूपी प्रियतम की विरहिणी पत्नी मानते हैं। यही कारण है कि वह दिन-रात अपने प्रियतम परमेश्वर से मिलने के लिए तड़पती और तरसती रहती है। अपने प्रिय के वियोग में उसका मन पलभर के लिए भी चैन नहीं पाता।

प्रश्न 3. कबीर की दृष्टि में कौन-से लोग कभी नहीं मरते?

उत्तर: जीवात्मा को ज्ञानियों और दार्शनिकों ने परमात्मा का ही अंश माना है। वह हर पल परमात्मा में ही निवास करती है। किन्तु जब वह जीव रूप में सांसारिक विषयों और विकारों के सम्पर्क में आती है तो भ्रमवश स्वयं को परमात्मा से भिन्न समझ बैठती है और उसके वियोग में दु:खी रहा करती है। कबीर ने आत्मा और परमात्मा की नित्य एकता को 'काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी' पद द्वारा स्पष्ट किया है। कमलिनी जैसे जल से उत्पन्न होती है और उसी में सदा निवास करती है, उसी प्रकार आत्मा भी परमात्मा से प्रकट होकर सदैव उसी में स्थित रहती है। कबीर के अनुसार जो ज्ञानी लोग आत्मा और परमात्मा के इस सम्बन्ध को जानते हैं, वे कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पठित दोहों के आधार पर गुरु के महत्व का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित संत कबीर दास के दोहों में गुरु की महिमा का प्रभावशाली वर्णन हुआ है। भारतीय संस्कृति सद्गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, शिव यहाँ कि साक्षात् परब्रह्म के तुल्य मानती है। कबीर ने भी पूरी श्रद्धा और आस्था के साथ गुरु की इस अपार महत्ता को स्वीकार किया है। कबीर गुरु और गोविन्द (ईश्वर) में कोई अंतर ही नहीं मानते हैं। यदि व्यक्ति अहंकार से मुक्त होकर गुरु की शरण में जाये तो उसे अवश्य ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। गुरु केवल ईश्वर की कृपा होने पर ही प्राप्त होता है। अतः ज्ञान के भण्डार और प्रभु से मिलाने वाले गुरु को कभी भूलना नहीं चाहिए। सद्गुरु शिष्य को अंधविश्वास और भेड़चाल से बचाकर उसे ज्ञान का मार्ग दिखाता है। गुरु ही थोथे अहंकार में लिप्त शिष्य को भवसागर में डूबने से बचाता है। कबीर ने तो यहाँ तक कहा है कि परमात्मा रूठ जाएँ तो गुरु शिष्य की रक्षा कर सकता है। किन्तु गुरु के रूठने पर ईश्वर भी उसकी रक्षा नहीं करता।

प्रश्न 2. "जल में उतपति जल में वास, जल में नलिनी तोर निवास।" पंक्ति का मूलभाव लिखिए।

उत्तर: उपर्युक्त पंक्ति कबीर के पद "काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी" से उद्धृत है। इस पद में कवि ने नलिनी (कमलिनी) को जीवात्मा का और सरोवर के जल को परमात्मा का प्रतीक बनाया है। वह कमलिनी रूपिणी आत्मा से प्रश्न करते हैं-अरी नलिनी ! तू क्यों

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

मुरझाई हुई है। तेरे चारों ओर तथा तेरे नाल में सरोवर को जल (परमात्मा) है। तेरी उत्पत्ति तथा निवास भी इसी सरोवर से है और निरंतर इसी सरोवर रूपी परमात्मा में तू स्थित है। भाव यह है कि कमलिनी को यदि जल न मिले तो वह कुम्हला जाएगी। परन्तु जब भीतर-बाहर दोनों ओर जल ही हो तो कमलिनी के मुरझाने का क्या कारण हो सकता है। इसका एकमात्र कारण यही हो सकता है। कमलिनी का किसी अन्य से प्रेम हो गया है और उसी के वियोग में वह दु:खी और मुरझाई हुई है। पंक्ति का मूल भाव यही है कि जीवात्मा और परमात्मा अभिन्न हैं। जीवात्मा की उत्पत्ति और स्थिति उसी सर्वव्यापी परब्रह्म में है। वह उससे कदापि अलग नहीं है।

प्रश्न 3. "माषी गुड़ में गड़ि रही हैं, पंख रही लपटाय। ताली पीटै सिर धुने, मीठे बोई माइ"।।
दोहे में निहित काव्य सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए।

उत्तर: इस दोहे में संत कबीर मनुष्य को सांसारिक सुख भोगों के जाल में फंसने से सावधान कर रहे हैं। जीव स्वभाव से मधुरता (सुख-चैन) का लोलुप रहा है। वह सांसारिक विषयों से प्राप्त झूठे सुखों को ही सबसे बड़ा सुख मानकर उनमें लिप्त हो जाता है। एक बार इस काल के जाल में फंसने के बाद इससे दूर निकलना असम्भव हो जाता है। संत कबीर ने अन्योक्ति के माध्यम से मनुष्यों को चेताया है। इस दोहे का भाव पक्ष बड़ा गम्भीर और लोहित की भावना से पूर्ण है। शैली की दृष्टि से भी यह दोहा कवि की अन्योक्ति प्रयोग की कुशलता प्रमाणित कर रहा है। मक्खी पर रख कर कवि ने मनुष्य को ही सम्बोधित किया है। गुड़ में चिपकी असहाय मक्खी की छूटने के लिए की जा रही छटपटाहट को बड़ा सजीव चित्र कबीर ने प्रस्तुत किया है। मुक्त होने के लिए पैरों का रगड़ना, सिर पर पैरों का चलाना स्वाभाविक चेष्टाएँ हैं किन्तु कवि ने उन्हें ताली पीटना और सिर धुनना बताकर अपने संदेश को उदाहरण सहित सही सिद्ध किया है।

प्रश्न 4. "परब्रह्म के तेज का कैसा है उनमान।"दोहे में कबीर ने परब्रह्म के तेज के सम्बन्ध में क्या कहा है?

उत्तर: इस दोहे में कवि ने परब्रह्म (परमात्मा) के स्वरूप के विषय में अपना मत प्रकट किया है। कबीर ईश्वर को निराकार और निर्गुण मानते हैं। निर्गुण ईश्वर का कोई रूप, रंग, जाति या आधार नहीं हो सकता। कबीर कहते हैं कि संत, ज्ञानी और भक्त आदि अपने-अपने अनुसार परमात्मा के स्वरूप यो तेज का वर्णन करते आए हैं। परन्तु वास्तव में उसका स्वरूप क्या है ? इस बारे में लोग केवल अनुमान के आधार पर ही अपना मत व्यक्त करते रहे हैं। सच तो यह है कि निर्गुण-निराकार ईश्वर के स्वरूप का वास्तविक वर्णन करने की सामर्थ्य अक्षरों अर्थात वाणी में है ही नहीं। वह अनंत-अरूप शब्दों की सीमा से परे है। वाणी द्वारा उसका वर्णन किया ही नहीं जा सकता। अतः भक्तों, साधकों और योगियों ने अपनी-अपनी साधना के बल पर अपने अंत:करण में जो ईश्वर का साक्षात्कार किया है, वही प्रामाणिक हैं। कोई कितनी ही कुशल वक्ता। क्यों न हो, वह वाणी द्वारा ईश्वर के स्वरूप को नहीं समझ सकता।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य

अध्याय 01 - कबीर

कवि परिचय

भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि एवं संतकाव्य धारा के प्रवर्तक के रूप में विख्यात कबीर एक महान संत , सच्चे समाज-सुधारक कवि थे इनका जन्म विक्रम सं. 1455 (कबीर- चरित्रबोध में उल्लिखित अनुसार) अर्थात् 1398 ई. में काशी में हुआ इनका लालन-पालन नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया। कबीर अशिक्षित थे ; परन्तु बहुश्रुत थे। वे ज्ञान और अनुभव से समृद्ध थे। वे स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। वे एक युग पुरुष थे, उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

अपनी अनुभूतियों को सहज एवं प्रभावशाली ढंग से जनमानस के हृदय तक पहुँचाने में सिद्धहस्त कबीर ने अपनी वाणी द्वारा धार्मिक संकीर्णता एवं बाह्याडम्बरों, कुरीतियों आदि का विरोध कर राम-रहीम की एकता के माध्यम से मत-मतान्तरों से ऊपर उठकर मानवता की स्थापना का शंखनाद किया वे आत्मिक साधना एवं मन की पूजा पर विश्वास करते थे। मध्यकाल के क्रांति पुरुष होने के कारण कबीर ने समाज के भीतरी और बाहरी दोनों पक्षों पर तीखे व्यंग्य किए रूढ़ियों से मुक्त सामाजिक समरसता की स्थापना का संदेश इनके काव्य में प्रमुख रूप से मिलता है। कबीर का शिल्प सरल , सहजग्राह्य है। उनका प्रतीक-विधान दैनिक जीवन से संबंधित है। भाषा पंचमेल खिचड़ी, सधुक्कड़ी है, जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी. ब्रज आदि

भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी रचनाएँ 'बीजक में संकलित हैं इनका देहावसान सं. 1575 (1518 ई.) को मगहर में हुआ। इस संबंध में एक दोहा प्रचलित है-

संवत् पन्द्रह सौ पिचत्तर, किया मगहर कैं गौन।
माघ सुदी एकादशी रलो पौन में पौन।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत संकलन में साखियों और पदों के माध्यम से कबीरदास ने गुरु महिमा का महत्व बताया है । उनकी दृष्टि में सद्गुरु और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है गुरु ज्ञान रूपी दीपक शिष्य के हृदय में प्रज्वलित कर संसार-सागर से पार होने का मार्ग सुझाता है। जब भगवान की कृपा होती है तभी सद्गुरु की प्राप्ति होती है। इसलिए मनुष्य को सदैव ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। यह संसार सेंमल के पुष्प की तरह क्षण भंगुर है. इसकी चमक-दमक में नहीं फँसना चाहिए। चंचल मन को संसार के आकर्षण से खींचकर परमात्मा के स्मरण में लगाने से ही कल्याण सम्भव है। यह जीवात्मा परमात्मा से कमलिनी नाल और जल की तरह जुड़ा हुआ है। कबीर के अनुसार जब ज्ञान रूपी आँधी का आगमन होता है तब हृदयगत समस्त विकार-माया, मोह, तृष्णा आदि नष्ट हो जाते हैं और मानव का हृदय प्रभु की प्रेम रूपी बरसात से निर्मल , पवित्र हो जाता है तथा जीवात्मा परमब्रह्म परमेश्वर से मिलने के लिए आतुर होने लगती है। कबीर ने साधना पथ पर चलने के लिए मर्दों का साथ त्यागने पर भी जोर दिया है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

दोहे

1. गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यहु आकार।।
आपा मेटि जीवित मरै, तौ पावै करतार।।
ज्ञान प्रकासा गुरु मिला, सों जिनि बीसरि जाइ।
जब गोविन्द क्रिया करी, तब गुरु मिलिया आइ।

कठिन शब्दार्थ – गोविन्द = ईश्वर। दूजा = दूसरा , भिन्न आकार = मानव शरीर। आपा = अहंकार। मेटि = मिटाकर, त्याग कर। जीवित परै = शरीर का मोह त्याग दे। करतार = ईश्वर।प्रकाशा = प्रकाशित हुआ , प्राप्त हुआ। जिनि = नहीं। बीसरि जाइ = भूल जाये। क्रिपा = कृपा, दया। मिलिया = मिला।

संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर ने गुरु की महिमा का परिचय कराया है।

व्याख्या – कबीर गुरु की महत्ता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गुरु और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं। दोनों को एक ही समझना चाहिए। यह हमारा शरीर स्थित मन ही इनमें अज्ञानवश भेद कराने वाला है। यदि मनुष्य अपने अहंकार को त्याग दे , जीते जी ही शरीर के मोह से मुक्त हो जाये तभी वह ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। कबीर कहते हैं कि जब मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ तभी मेरा सद्गुरु से मिलन हो पाया अथवा गुरु की शरण में जाने पर ही मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ। ऐसे कृपालु गरु और उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को मैं कहीं भूल ना जाऊँ, इसका मुझे निरंतर ध्यान रखना है। जब ईश्वर कृपा करते हैं तभी जीव को गुरु की प्राप्ति होती है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

विशेष –

1. भारतीय संस्कृति में गुरु को बहुत उच्च स्थान प्राप्त रहा है। "गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः यही मान्यता कबीर ने प्रथम दोहे में व्यक्त की है।
2. अज्ञान और अहंकार के कारण ही मनुष्य गुरु और ईश्वर में भेद माना करता है। अहंकार त्यागने पर ही गुरुकृपा से परमात्मा की प्राप्ति होती है।
3. गुरु की प्राप्ति ईश्वर की कृपा का परिणाम हुआ करती है। अतः हृदय से गुरु का ध्यान न हटने पाए, इसी में मनुष्य का कल्याण है।
4. भाषा सरल है। शैली उपदेशात्मक है और गूढ़ अर्थ वाली है।
5. कबीर की गुरु भक्ति का परिचय इन दोहों की पंक्ति-पंक्ति से मिल रहा है।

2. पीऊँ लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगै मैं सत्गुरु मिल्या, दीपक दीया हाथ।
बूढ़ा था पै ऊबरा, गुरु की लहरि चमकि।
भेरा देख्या जरजरा,(तब) उतरि पड़े फरंकि।।

कठिन शब्दार्थ – पाछै = पीछे। लागा जाइ था = (पीछे-पीछे) चला जा रहा था, अंधानुकरण कर रहा था। लोक वेद = लौकिक और वैदिक परम्पराएँ। आगै मैं = आगे चलकर।मिल्या = मिला। दीपक = ज्ञानरूपी दीपक। बूढ़ा (बूड़ा) = डूबने वाला था। ऊबरा = बच गया। गुरु की लहरि = गुरु की कृपारूपी लहर। चमंकि = चमकने पर , चौंकने पर। भेरा = बेड़ा या नाव। जरजरा = जर्जर, टूटा-फूटा। उतरि पड़े = उतर पड़ा। फरंकि = फुर्ती से, तुरंत।।

संदर्भ तथा प्रसंग –प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर ने गुरु को ज्ञान प्रदाता स्वीकार

करते हुए उनकी कृपा से सही मार्ग प्राप्त होने की बात स्वीकार रहे हैं। गुरु कृपा से ही वह संसार-सागर में डूबने से बचे हैं।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि वह भी सामान्य लोगों की तरह, सांसारिक और वैदिक परम्पराओं का आँख बंद करके अनुसरण कर रहे थे। परन्तु आगे चलने पर उन्हें सद्गुरु मिले। उन्होंने कृपा करके उनके हाथ में ज्ञानरूपी दीपक पकड़ा दिया। ज्ञानदीप के प्रकाश में ही वह जान पाए कि वह तो अज्ञान के मार्ग पर जा रहे थे।

इस प्रकार गुरुकृपा से ही वह ईश्वर भक्ति के सीधे-सादे मार्ग का दर्शन पा सके। कबीर कहते हैं कि वह भी अज्ञानी जनों की भाँति अहंकार रूपी बेड़े पर सवार होकर संसार-सागर से पार होने की चेष्टा कर रहे थे। अहंकार का जर्जर बेड़ा उन्हें भवसागर-माया-मोह आदि में डुबोने ही वाला था , परन्तु गुरुकृपा रूपी लहर ने टक्कर देकर उन्हें चौंका दिया, सचेत कर दिया। गुरु कृपा के प्रकाश में ही उनको ज्ञात हुआ कि वह अन्धकार का बेड़ा तो नितान्त जर्जर स्थिति में था और वह डूबने ही वाले थे। अत: वह तुरन्त उस पर से उतर पड़े। उन्होंने अहंकार का परित्याग करके गुरु द्वारा प्रदर्शित मोक्ष मार्ग को अपना लिया।

विशेष –

1. भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों को मुक्त भाव से प्रयोग हुआ है।
2. शैली उपदेशात्मक है।
3. गुरु के बिना ज्ञान तथा संसार से मुक्ति मिलना सम्भव नहीं है, यह बताया गया है।
4. लोकाचार और वैदिक कर्मकाण्ड से ऊपर उठकर, परमात्मा की सहज भक्ति करने से ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है। यह मत व्यक्त किया गया है।
5. दीपक दीया हाथ में लक्षणा शक्ति का सौन्दर्य है।

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

3. कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाई।
हरि सुमिरन हाथ घड़ा, बेगे लेहु बुझाई।।
पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे के सोभा नहीं, देख्या ही परमान।।

कठिन शब्दार्थ – चित्त = मन। चमंकियो = चकित हो गया , शंकित हो गया। चहुँदिस = चारों ओर। लाइ = आग। सुमिरन = स्मरण, भजन। बेगे = शीघ्र। पारब्रह्म = ईश्वर।उनमान = अनुमान, कल्पना। सोभा = रूप। देख्या = देखा, दर्शन प्राप्त किया। परमान = प्रमाण।

संदर्भ तथा प्रसंग –प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर भगवद-भजन का महत्व बता रहे हैं और दूसरे दोहे में परमात्मा के स्वरूप के विषय में अपना मत प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या – कबीर कहते हैं कि जगत में चारों ओर विविध तापों की आग लगी देखकर उनका मन चौंक कर सशंकित हो गया। उनसे बचने का उपाय सोचने लगा। तब उन्हें ध्यान आया कि उनके हाथों में तो प्रभु के स्मरण रूपी जल से भरा घड़ा है। तब क्या चिंता थी। शीघ्र ही वह आग बुझाई जा सकती थी। कबीर कहते हैं कि परब्रह्म तेज स्वरूप है किन्तु उस तेज का शब्दों में वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है। केवल उसके बारे में अनुमान ही किया जा सकता है। उसके तुल्य कोई दूसरा रूप नहीं दिखता, जिससे तुलना करके उसका ज्ञान कराया जा सके, जिसने उसे देखा है। – उसी का कथन प्रामाणिक माना जा सकता है अथवा उसे देखने पर ही वास्तविक ज्ञान हो सकता है।

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

विशेष –

1. सांसारिक ताप या विषयों के भोग की लालसा अग्नि के समान संतापित करने वाली है। इससे केवल परमात्मा का स्मरण करने वाला भक्त ही बच सकता है, यह मते व्यक्त किया गया है।
2. परब्रह्म के स्वरूप को वाणी द्वारा नहीं समझाया जा सकता। उसका तो ज्ञानरूपी नेत्रों से ही दर्शन प्राप्त हो सकता है। ऐसा कबीर का मत है।
3. 'चित्त चमंकिया' और 'लागी लाइ' में अनुप्रास तथा 'हरि सुमिरन हाथों घड़ा' में रूपक अलंकार है।
4. भाषा सरल तथा मिश्रित शब्दावली युक्त है।
5. शैली उपदेशात्मक है।

4. चिंता तौ हरि नाँव की, और न चितवै दास।
जे कछु चितवें राम बिन, सोइ काल की पास।।
नैनां अंतर आव तू नैन झाँपि तोहि लेउँ।
नी हौं देख और कें, ना तुझ देखन देउँ।।

कठिन शब्दार्थ – चिंता = चिंतन ध्यान। नाँव = नाम। चितवै = चिंतन करता है। दास = कबीर। काल की पास = काल के जाल में फंसना। अंतर = भीतर। आव = आओ। तू = ईश्वर। झाँपि = बंद करके। तोहि = तुझे। लेउँ = ले लें, बंद कर लें। = मैं। कें = को।।

संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर कह रहे हैं कि ईश्वर के नाम का स्मरण करने के अतिरिक्त किसी सांसारिक विषय का चिंतन बंधन में डालने वाला है। दूसरे दोहे में कबीर परमात्मा रूपी प्रियतम से अनुरोध कर रहे हैं कि वह उनके नेत्रों में आकर बस जाय।

व्याख्या – कबीर कहते हैं कि उन्हें केवल प्रभु के नाम का स्मरण करते रहने की चिंता है और कोई अन्य सांसारिक चिंतन वह नहीं करते। उन्हें सदा यह चिंता रहती है कि वह कहीं प्रभु के नाम का स्मरण न भूल जाएँ। हरिनाम के अतिरिक्त जब व्यक्ति किसी सांसारिक विषय का चिंतन करने लगता है तो उसका काल के जाल में फंसना , जन्म-मृत्यु के चक्र में जाना निश्चित है। कबीर स्वयं को प्रियतम राम या ईश्वर की प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहते हैं-प्रियतम। आप मेरे नेत्रों में आकर बस जाइए और मैं नेत्रों को बंद कर लें। ऐसा करने से न तो मैं किसी और (सांसारिक विषय) को देख सकेंगा और न आप को ही किसी और के द्वारा देखे जाने का अवसर मिलेगा। मेरे और आपके बीच कोई तीसरा आए, यह मुझ से सहन नहीं होगा।

विशेष –

1. सांसारिक बंधनों से मुक्त होने के लिए प्रभु के नाम का चिंतन ही एकमात्र उपाय है। यह संदेश दिया है।
2. लौकिक प्रेम और आध्यात्मिक साधना का मधुर संगम द्वितीय दोहे में साकार हो गया है। एक विरहिणी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करके अक्खड़ कबीर पाठकों को चकित कर रहे हैं।
3. "ना हों देखौं ..... देखन देउ" पंक्ति आत्मा और परमात्मा की अनन्य एकता का संकेत कर रही है दोनों के बीच किसी तीसरे (संसार) की उपस्थिति भला कैसे सहज हो सकती है।
4. उपदेशात्मक तथा भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

5. बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कें, मनि नाहीं विश्राम।।
मूरिख संग न कीजिए, लोहा जल न तिराह।
कदली सीप भुवंग मुख, एक बूंद तिहूँ भाइ।।

कठिन शब्दार्थ – जोवती = देखती हूँ, प्रतीक्षा करती हूँ। बाट = मार्ग। राम = परमात्मा। जिव = जीव, प्राण, मन। तुझ = तुमसे। विश्राम= चैन, धैर्य। मूरिख = मूर्ख। तिराइ = तैरता है। कदली = केले का वृक्ष।सीप = सीपी , जिसमें मोती बनता है। भुजंग = सर्प। तिहूँ = तीन। भाइ = प्रकार, रूप।

संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर परमात्मारूपी प्रियतम के वियोग में व्याकुल विरहिणी आत्मा बनकर अपनी अधीरता का वर्णन कर रहे हैं। द्वितीय दोहे में कबीर मूर्खा का संग न करने का संदेश दे रहे हैं। संगति के प्रभाव को टाला नहीं जा सकता। अत: अज्ञानियों से दूर रहना ही अच्छा है।

व्याख्या – परमात्मारूपी प्रियतम से आत्मारूपिणी प्रेयसी या पत्नी बिछुड़ी हुई है। वह निवेदन कर रही है कि उसे प्रियतम की बाट देखते-देखते बहुत दिन बीत गए हैं। किन्तु अभी तक प्रिय-मिलन की पावन घड़ी नहीं आई। आत्मा कहती है-हे राम! मेरा मन बड़ा व्याकुल और अधीर हो रहा है। वह तुमसे मिलने को तरस रहा है। अत: आप मुझे अपनाकर विरह वेदना से मुक्त कर दीजिए। संगति का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। अत: साधक या भक्त को उन लोगों से दूर रहना चाहिए जो मूर्खतावश मनुष्य जीवन को सांसारिक सुखों-विषयों के भोग में नष्ट कर रहे हैं। जैसे लोहा कभी जल पर नहीं तैर सकता, उसी प्रकार हठी अज्ञानियों को भी परमात्मा का प्रेमी नहीं बनाया जा सकता। संगति का फल स्वाति नक्षत्र की बूंद से प्रमाणित होता है। जब वह केले पर पड़ती है तो कपूर बन जाती है। सीप में गिरने पर मोती बन जाती है और

सर्प के मुख में पड़ने पर वही बूंद प्राणघातक विष बन जाती है। अत: कदली और सीप जैसे सज्जनों और प्रभु भक्तों की संगति करना ही कल्याणकारी हो सकता है।

विशेष –

1. आत्मा और परमात्मा के नित्य संबंध को लौकिक प्रेम में ढालकर कबीर ने प्रेम को ज्ञान और योग साधना से सुगम और सुखदायी मार्ग बताया है।
2. कुसंग से बचने और ईश्वर प्रेमियों की संगति करने का संदेश दिया गया है।
3. प्रथम दोहे में सांगरूपक अलंकार है।
4. विविध भाषाओं के शब्दों का सहज मेल कथन को प्रभावी बना रहा है।
5. वियोग शृंगार रस की हृदयस्पर्शी छवि अंकित हुई है।
6. द्वितीय दोहे में उपदेशात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

6. यहु ऐसा संसार है, जैसा सेवल फूल।।
दिन दस के व्यौहार कौं, झूठेरंग न भूलि।।
माघी गुड़ में गड़ि रही पंष रही लपटाई।
ताली पीटै, सिर धुनें, मीठु बोई माई।

कठिन शब्दार्थ – यहु = यह। सेवल फूल = एक फूल जो ऊपर से बड़ा सुन्दर होता है, अंदर रूई जैसी पदार्थ भरा रहता है। दिन दस = थोड़ा समय। व्यौहार = व्यवहार, जीवन। माषी = मक्खी , जीव। गड़ि रही = धंस गई है। पंष = पंख। लपटाई = लिपट गए हैं , सन गए हैं। ताली पीटै = पैरों को परस्पर रगड़ती है। सिर धुनै = सिर पीटती है, पछताती है। मीठे = मीठे में, सांसारिक सुखों में। बोई = फंस गई।

संदर्भ तथा प्रसंग –प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर ने संसार की असारता का परिचय कराते हुए उसके ऊपरी आकर्षण से भ्रम में न पड़ने की चेतावनी दी है। दूसरे दोहे में कबीर अन्योक्ति के माध्यम से, मधुर लगने वाले सांसारिक सुखों में न फंसने का संदेश दे रहे हैं।

व्याख्या – कबीर कहते हैं कि यह संसार सेंबल के फूल की तरह है। सेंबल का फूल ऊपर से बड़ा लुभावना होता है। उसके बाहरी लाल रंग और रूप के कारण तोता उसे मधुर फल समझ बैठता है और उसके पकने की प्रतीक्षा करता है। किन्तु पकने पर उसमें से रूई जैसा नीरस पदार्थ निकल पड़ता है। तोता बेचारा निराश होकर उड़ जाता है। इसी प्रकार संसार भी मनुष्य को बड़ा सुखद और सुंदर प्रतीत होता है। परंतु सांसारिक भोगों का परिणाम अंतत: एक धोखा सिद्ध होता है। मनुष्य पछताता संसार से विदा हो जाता है। कबीर कहते हैं कि इस दस दिन के अत्यंत छोटे मानव जीवन को सांसारिक सुखों में नष्ट मत करो। इसके बाहरी रूप-रंग के धोखे में पड़कर इस दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ मत करो। इसे परमेश्वर के स्मरण में लगाओ।

दूसरे दोहे में कबीर ने अन्योक्ति द्वारा मनुष्य को सांसारिक सुखों में फंसने से सावधान किया है। मक्खी मीठे गुड़ का स्वाद पाने के लालच में गुड़ में चिपक जाती है और फिर निकल नहीं पाती। उसके पंख गुड में सनकर बेकार हो जाते हैं। वह अपने अगले पैरों को मलती है। सिर को धुनकर पछताती प्रतीत होती है। लेकिन मीठे के लोभ में फंस गई वह बेचारी उस जकड़ से कभी नहीं निकल पाती और वह गुड़ ही उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है। सांसारिक सुखों की मिठास में जो जीव एक बार फँस जाता है वह फिर कभी उनसे मुक्त नहीं होता। अत: कबीर मनुष्य को सावधान कर रहे हैं कि वह

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

ईश्वर से प्रेम करे , उसका स्मरण करे और अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

विशेष –

1. पहले दोहे में सांसारिक सुखों को भ्रम बताते हुए ईश्वर की आराधना का संदेश दिया गया है।
2. द्वितीय दोहे में अन्योक्ति अलंकार के माध्यम से मनुष्य को सावधान किया गया है कि सांसारिक विषयों के भोग से मिलने वाला सुख एक धोखा है। जो एक बार इनमें फँसा, वह पछताता हुआ ही संसार से विदा होता है।
3. "यहु ऐसा ..... सेंबल फूल। ' में उपमा अलंकार है। "दिन दस' में अनुप्रास अलंकार है।
4. शैली आलंकारिक तथा उपदेशात्मक है।

पद

1. काहे री नलिनी हूँ कुम्हलानी। तेरे ही नालि सरोवर पानी।।
जल में उतपत्ति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास।
ना तलि तपतिन उपरि आगि, तोर हेत कहुकासनि लागि।।
कहै कबीर जे उदकि समान, ते नंहि मुए हमारे जान।

कठिन शब्दार्थ – काहे = क्यों। नलिनी = कमलिनी, जीवात्मा। कुम्हिलानी = मुरझा रही है। नालि = नली, कमल के फूल की डंडी , तुम में ही (प्रतीकार्थ) सरोवर = तालाब, परमात्मा। उतपत्ति = उत्पत्ति, प्रकटीकरण (प्रतीकार्थ) जल = पानी, परमात्मा (प्रतीकार्थ)।बास = रहना, स्थिति (प्रतीकार्थ)।तोर = तेरा।निवास = स्थायी रूप से रहना। तलि = तला , नीचे से। ऊपरी = ऊपर से। आगि = कष्ट। हेत = प्रेम, मोह। कहु = बता।कासन = किससे।लाग = लगा है। उदकि = जल। मुए = मरे।जान = समझ से।

संदर्भ तथा प्रसंग –प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर आत्मा और परमात्मा की एकता के सिद्धान्त पर बल दे रहे हैं। कबीर के मतानुसार आत्मा और परमात्मा एक ही है। सांसारिक विषयों के सम्पर्क में आकर जीवात्मा स्वयं को परमात्मा से भिन्न समझ बैठती है और स्वयं को नाशवान समझते हुए मृत्यु के भय से दु:खी रहती है। इसी तथ्य को कबीर ने नलिनी और सरोवर के प्रतीकों द्वारा इस पद में स्पष्ट किया है।

व्याख्या – (सामान्य अर्थ) "अरी ! कमलिनी तू क्यों मुरझाई हुई है ?" तेरे नाल (डंडी) में तो तालाब का जल विद्यमान है। जल मिलते . रहने पर भी तेरे कुम्हलाने का क्या कारण है? हे कमलिनी ! तेरी उत्पत्ति जल में ही हुई है और तू जल में ही सदा से निवास कर रही है। कभी इससे अलग नहीं हुई है, निरंतर जल में रहते हुए भी तेरे मुरझाने का क्या कारण है। न तो तेरा तला तप रहा है न ऊपर से कोई आग तुझे तपा रही है। यह बता कि तेरा किसी से प्रेम तो नहीं हो गया है। जिसके वियोग के दु:ख से तू मुरझा रही है। कबीर कहते हैं कि जो ज्ञानी पुरुष अपने भीतर के और बाहर के जल की एकता का ज्ञान रखते हैं। वे हमारे मतानुसार कभी मृत्यु के भय से पीड़ित नहीं होते। आत्मा की और परमात्मा की एकता जानने और मानने वाला कभी मृत्यु से भयभीत नहीं होता।

(प्रतीकार्थ) हे जीवात्मा ! तू इतनी दु:खी क्यों है ? तेरा मन मुरझाया हुआ सा क्यों हो रहा है। तू प्रतिपल परब्रह्म के संपर्क में रहती है। तेरी उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है और तू सदा परमात्मा के मध्य ही स्थित रहती है। कोई भी सांसारिक दु:ख (ताप) तुझे कष्ट नहीं पहुँचा सका।लगता है तू उस परब्रह्म से भिन्न किसी और के प्रति (सांसारिक विषयों में) आसक्त है। इसके अतिरिक्त तेरे दु:खी होने का और क्या कारण हो सकता है ? कबीर का

कहना है कि कमलदण्ड में स्थित जल और सरोवर का जल जैसे एक है, उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा भी अभिन्न है। इस तत्व को जो ज्ञानी लोग जान चुके हैं वे स्वयं को अजर-अमर मानते हुए, मृत्यु के भय से सदा मुक्त रहते हैं।

विशेष –

1. कबीर ने अन्योक्ति के माध्यम से आत्मा और परमात्मा की तात्विक एकता के सिद्धान्त को सरल भाषा और सुपरिचित प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया है।
2. पद में नलिनी जीवात्मा को और जल परमात्मा का प्रतीक है।
3. जब तक आत्मा सांसारिक विषयों पर आसक्त रहती है। वह स्वयं को नाशवान समझते हुए दु:खी रहती है। जब उसे परब्रह्म से नित्य एकता का ज्ञान होता है तो सारे कष्टों से मुक्त हो जाती है , यह सत्य प्रकाशित किया गया है।
4. सम्पूर्ण पद में रूपकातिश्योक्ति अलंकार है। इसके अतिरिक्त अनुप्रास तथा अन्योक्ति अलंकार भी है।
5. भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल है और शैली प्रतीकात्मक है।

2. संतौ भाई आई ग्यान की आँधी. रे!

भ्रम की टाटी सबै उड़ाणी, माया रहै न बाँधी रे।।

हितचित की दोउ थुनी गिरानी, मोह बलींडा टूटा।

त्रिस्न छाँनि परी घर ऊपर, कुबुधि का भांडा फूटा।।

ज़ोग जुगति करि संतौ बाँधी, निरचू चुवै न पाणीं।

कूड़-कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।

आँधी पीछे जल बूठा, प्रेम हरी जन भीना।

कहै कबीर भांन के प्रगटे, उदित भयो तम घीनाँ।

कठिन शब्दार्थ – टाटी = टटिया, टाटा का परदा।उड़ाणी = उड़ गईं। हित चित = चित्त की दो अवस्थाएँ, (विषयों में आसक्ति और बाहरी आचरण) , द्विविधि या अनिश्चय की अवस्था। थूनि = खम्भा। गिरानी = गिर गई। बलींडा = बल्ली (छाजन को साधने वाला बीच का बेड़ा)।त्रिस्ना = तृष्णा, चाह। छाँनि = छप्पर।कुबुधि = कुबुद्धि, कुविचार।भाँडा = बर्तन।जोग जुगति = योग की युक्ति, सोच-विचार, योग साधना।निरचू = निश्चिंत , बेफिक्र।चुवै = चूना , टपकना। पाणीं = पानी।कूड़ = कूड़ा , छल-कपटे।काया = शरीर और मन। निकस्या = निकल गया। हरि की गति = ईश्वर का स्वरूप या कृपा।बूढ़ा = उमड़ा या बरसा। जने = भक्त। भीना = भीग गया, मग्न हो गया। भांन = सूर्य, ज्ञान।तम = अंधकार, अज्ञान।षीनाँ = क्षीण, नष्ट।

संदर्भ तथा प्रसंग –प्रस्तुत दोहे हमारी **पाठ्यपुस्तक सरयू** में संकलित **कबीर** नामक पाठ से लिए गए हैं। इनमें कबीर मनुष्य के हृदय में ज्ञान का उदय होने पर, उसके समस्त दुर्गुणों के नष्ट हो जाने का उल्लेख कर रहे हैं।

व्याख्या – कबीर कहते हैं। हे संतो ! हमारे अंतर्मन में ज्ञान की आँधी आई हुई है। इस आँधी ने हमारे मन की भ्रमरूपी टटिया को उड़ा दिया है। माया बंधन भी उसे रोक नहीं पा रहे हैं। भाव यह है कि ज्ञानोदय होने पर हमारे मन का भ्रम और माया का प्रभाव समाप्त हो गया है। हमारे मनरूपी घर पर तृष्णारूपी छप्पर पड़ा था और द्विविधा या अनिश्चयरूपी दो खम्भे इसे साधे हुए थे। ज्ञान की प्रबल आँधी ने इनको गिरा दिया है। इससे इन खम्भों पर टिकी हुई मोहरूपी बल्ली भी टूट गई है। भाव यह है कि ज्ञानोदय होने से हमारे मन की द्विविधा और मोह भी नष्ट हो गया।

यह बल्ली के टूटते ही तृष्णारूपी छप्पर (छान) भी गिर पड़ी और वहाँ स्थित कुबुद्धि रूपी सारे बर्तन, भाँड़े फूट गए अर्थात् सारे कुविचार नष्ट हो गए। हे

संतो ! अबकी बार हमने घर पर संतोषरूपी नया छप्पर बड़े यत्न से ढका और बाँधा है। अब हम पूर्णत: निश्चिन्त हैं, क्योंकि अब इसमें से एक बूंद भी वर्षा का पानी नहीं टपक सकता अर्थात् सांसारिक विषय विकार अब हमारे हृदय को लेश मात्र भी प्रभावित नहीं कर सकते। मन में ज्ञान के आगमन से मुझे हरि' के स्वरूप का ज्ञान हो गया है और मन . का सारा कूड़ा-करकट (दुर्गुण) साफ हो गया है। ज्ञानोदय के पश्चात् मेरा भक्त हृदय प्रभु प्रेम की वर्षा में भीग ग.. है। ज्ञानरूपी सूर्य के उदय से अज्ञानरूपी अंधकार पूर्णतः नष्ट हो चुका है।

विशेष –

1. स्वभाव के दुर्गुणों से मुक्ति पाने का कबीर एक ही उपाय मानते हैं , वह है हृदय में ज्ञान-सूर्य का उदय होना। ज्ञान के आने पर किस प्रकार सारे विकार एक-एक करके विदा हो जाते हैं। यही इस पद में कबीर ने वर्णित किया है।
2. कबीर स्वयं को राम की दुलहिन और परमात्मा की विरहिणी के रूप में प्रस्तुत करते हैं साथ ही वह प्रेम और भक्ति के साथ ज्ञान का प्रकाश भी आवश्यक मानते हैं। ज्ञानी अर्थात् निर्मल हृदय भक्त ही परमात्मा की कृपा का पात्र हो सकता है। एद में यही संकेत है।
3. पद में सांगरूपक, रूपक तथा अनुप्रास अलंकार है।
4. प्रतीकात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है।
5. भाषा में तद्भव शब्दों का प्रयोग है और साहित्यिक झलक विद्यमान है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar
Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg